प्रातः क्लास 10-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे इतना समय यहां बैठे हैं दिल में यह आता है कि हम जैसे शिवालय में बैठे हैं। शिव बाबाभी याद आ जाता, स्वर्ग भी याद आ जाता है। यह हैवैश्यालय। अभी वैश्यालय से घृणाआती है। शिवालय को तो बहुत अच्छी रीत याद करना है। याद से ही सुख होता है। यह भी बुधि में याद रहे हम शिवालय में बैठे हैं। तो खुशी भी होंगी। जाना तो आखरीन शिवालय में ही है। शान्तिधाम में कोई बैठ तो नहीं जाना है। वास्तव में शान्तिधाम कोभी शिवालय कहेंगे। सुखधाम को भी शिवालय कहेंगे। शिव बाबा ही तुम को शान्तिधाम में ले जाते हैं। शिव बाबा रहते भी वहां ही हैं। तो दोनो को शिवालय कहेंगे। दोनो को शिव बाबास्थापन करते हैं। तुम बच्चों को याद भी दोनो को करना है। वह शिवालय शान्ति के लिए, वह शिवालय सुख के लिए। यह तो है दुःखधाम। अभी तुम संगम युग पर बैठे हो। शान्धाम और सुखधाम के सिवाय और की भी याद न होनी चाहिए। भूल कहां भी बैठे हो, धंधे आद में बैठे हो तो भी बुधि में दोनो शिवालय याद होना चाहिए। दुःखधाम को भूल जाना है। बच्चे जानते हैं यह वैश्यालय अभी खत्म हो जाना है। यहां बैठे बच्चों को झूटकाआद भी नहीं खाना चाहिए। बहुतों को बुधि कहां2 और तरफ चली जाती है। माया के विघ्न पड़ते हैं। तुम बच्चों को बाप घड़ी2 कहते हैं बच्चे मन्मनाभव। गीन्न2 युक्तियां भी बतलाते हैं। यहां बैठे हो तो भी बुधि में याद करो हम पहले शान्तिधाम शिवालय में जावेंगे फिर सुखधाम शिवालय में आवेंगे। ऐसा याद करने से पाप कटते जावेंगे। जितना याद करते जावेंगे उतना ही तुम कदम को बढ़ाते जावेंगे। यहां और कोई ख्यालात में नहीं बैठना चाहिए। नहीं तो तुम औरों को नुकसान पहुंचाते हो। फायदे के बदली और ही नुकसान करते हो। आगे निष्ठा में जब बैठते थे तो सामने कोई को जांच करने के लिए बिठाया जाता था:, कौन झूटका खाते हैं, कौन आंख बन्द कर बैठते हैं। तुम बड़ा खबरदार रहते थे। बाप भी देखते रहते हैं इनका बुधि योग कहांभटकता है क्या। या झूटका खाते हैं क्या। ऐसे भी बहुत आते हैं जो कुछ भी समझते नहीं हैं। ब्राहमणियां ले आती है। शिव बाबा के आगे बच्चे बड़े अच्छे आनी चाहिए। जो गफ्लत में न रहे। क्योंकि यह कोई आर्डीनरी टीचर नहीं है। बाप बैठसिखलाते हैं। तो यहां बहुत ही सावधान होकर बैठना चाहिए। बाबा 15मिनट शान्ति मेंबिठाते हैं, तुम तो घंटा दो घंटा भी बैठते हो तो जो कच्चे हैं उन्हों को सावधान करना चाहिए। ब्राहमणियां जो भी सेन्टर पर रहती हैवह तो पूरा जानती नहीं है। सावधान करने से सुजाग हो जावेंगे। कुछ समय याद में रहेंगे। नहीं तो जैसे कि विघ्न डालते हैं। क्योंकि बुधि कहां न कहां भटकती रहती है। सभी तो महारथी नहीं है ना। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे भी हैं।

बाबाआज विचार सागरमथन कर के आये थे कि म्युजियम में अथवा प्रदर्शनी में तुम बच्चे जो शिवालय वैश्यालय और पुरुषोत्तम संगम युग 3सीन दिखाते हो। यह बहुत ही अच्छा है। समझाने के लिए। यह बहुत बड़ा2 बनानी चाहिए। सब से बड़ा हाल इसके लिए होना चाहिए। जो मनुष्यों की बुधि में झट बैठे। कई बच्चे तो जो बनाते हैंउसमें ही खुश रहते हैं। परन्तु विचार चलाना चाहिए इन में हम इम्प्रुवमेन्ट कैसे लावें। शिवालय वैश्यालय और बीच में पुरुषोत्तम संगम युग यह तो बहुत अच्छा बनाना चाहिए। इन से मनुष्यों को अच्छी समझानी मिल सकती है। समझेंगे हम तो कलियुगी रावण राज्य वैश्यालय के हैं। ठीक2 कर समझाना चाहिए। सिवाय पुरुषार्थ के कोई भी सदगति को पावेंगे नहीं। तपस्या में भी तुम 5-6 को बिठाते हो। परन्तु नहीं। 10-15 को तपस्या में बिठाना चाहिए। बड़ाबनाना चाहिए। वैश्यालय तो बहुत बड़ादिखाना चाहिए। उस में सभी दिखाना चाहिए इसमें यह यह होता है। यह भीख मांगते हैं। सन्यासी क्या करते हैं, बड़ा2 बनाकर क्लीयर अक्षर में लिख देना चाहिएकलियुगी पतित वैश्यालय। परजेन्ट (वर्तमान) यह वैश्यालय। तो मनुष्य समझे हम तो वैश्यालयमें हैं। तुम इतना समझाते हो फिर समझते थोड़े ही हैं। जैसे कि बन्दर बुधि हैं। तुम मेहनत करते हो समझाने लिए। पत्थर बुधि है ना। तो जितना हो सके अच्छी रीत समझाना चाहिए। लिखना चाहिए वर्तमान ---

कलियुगी भ्रष्टाचारी वेश्यालय। तो मनुष्य समझे अभी की बात है। जो सर्विस में रहते हैं उन्हों को सर्विस बढ़ाने की का ख्याल करना चाहिए। प्रोजेक्टर प्रदर्शनी में भी इतना मजा नहीं है जितना कि म्युजियम में। प्रोजेक्टर से तो कुछ भी समझेंगे नहीं, फालतू है। सब से अच्छा है म्युजियम। भल छोटा हो। छोटे 6कमरे हैं उसमें भी म्युजियम हो। एक कमरे में तो शिवालय, वेश्यालय, पुरुषोत्तम संगम युग का सीन हो। इस समय सभी हैं भ्रष्टा० एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं। मनुष्य कोई समझते थोड़े ही हैं कि हम भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्ठाचारी कोई हो न सके। इतना जोर से समझाना है। बड़ी विशाल बुधि चाहिए। बेहद का बाप, बेहद का टीचर आये हैं तो बैठ थोड़े ही जावेंगे कि बी०ए०, एम०ए० पास करेंगे। बाप बैठा थोड़ेई रहेगा। थोड़ी टाईम में चला जावेगा। बाकी थोड़ा समय है सो भी जागते नहीं हैं। अच्छी2 तो बच्चियां हैं। वह कहेंगे इन 400-500 लिये क्यों मुफ्त टाईम बरबाद करें। फिर शिवालय में हम पद क्या पावेंगे। बाबा देखते हैं कुमारियां तो पक्की है। भल कि ना भी बड़ा पघर वाला हो तो भी यह तो जैसे मुठी में भुगरा है। यह सभी खलास हो जावेंगे। कुछ भी रहेगा नहीं। बाप भूगरे मुठी छुड़ाने आये हैं। परन्तु छोड़ते नहीं हैं। इसमें हैं चने की मुठी, इसमें है विश्व की बादशाही। वह तांपाई-पैसे के चने हैं। उनके पिछाड़ी कितने हैरान होते हैं। कुमारियां तो पक्की है। वह पढ़ाई तो पाई-पैसे की है। उनको छोड़कर रूहानी नालेज पढ़ें तो मगज़ भी खुले। ऐसी2 छोटी2 बच्चियां बड़ों2 को बैठ नालेज दे। बाप आये हैं शिवालय स्थापन करने। यह तो मानते हैं यह सभी मिट्टी में मिल जावेगा। चने भी नसीब में नहीं आवेंगे। किसके मुट्ठी में 5 चनेअर्थात 5लाख होंगे वह भी खत्म हो जावेगा। उनको छोड़ने लिए मनुष्य कितना तरफते हैं। बाप कहते हैं बच्चे अभी टाईम बहुत थोड़ा है। ऐसे मत समझो आठ वर्ष पड़े हैं। दिन-प्रति-दिन हालते खराब होती जाती है। अचानक आफतें आ जाती हैं। मौत भी अचानक होती है। मुट्ठी में चने होते भी प्राण निकल जाते हैं। तो मनुष्य को इस बन्दरफते से छूड़ाना है। सिर्फ म्युजियम देख खुश नहीं होना है। कंगाल कर दिखाना है। मनुष्यों को सुधारना है। बाप तो तुम बच्चों को विश्व की बादशाही दे रहे हैं। बाकी 8 वर्ष। मैं तो समझता हूं 5 वर्ष भी मुश्किल होंगे। चने(भुगड़े) भी किसके नसीब नहीं होंगे। सभी खत्म हो जावेंगे। इससे तो क्यों नहीं बाप से विश्व की बादशाही ले लो। कोई तकलीफ की बात नहीं। सिर्फ बाप को याद करना है और स्वदर्शनचक्र फिराना है। भुगड़ों को मुट्ठी खाली कर, हीरे-जवाहरों से मुट्ठी भरकर जाना है। आगाखां तो तुम्हारे कुछ भी नहीं है। अल्प काल के लिए सुखरहते हैं। वह भी बड़े गन्दे होते हैं। शराब पीनारस में जाना। तो बाप समझाते हैं इन भुगड़े(चने) मुट्ठी पिछाड़ी प्राण मत गंवाओ। मनुष्य श्मशान में ले जाते हैं, हाथ खाली जाते हैं। तुम्हारे हाथ भरतू जाती है। तुम बुधि से समझ सकते हो हमको तो बहुत बड़ी कमाई करनी है। यह दो पांच रुपया तो कुछ नहीं है। जो अच्छी रीत यह समझते हैं उनको दिल में आता है होंगा हम अपनी जीवन भुगड़ों पिछाड़ी क्यों बरबाद करें। हां कोई बुजुर्ग है, बाल-बच्चे बहुत हैं तो उनको समझाना होता है। कुमारियों लिए तो बहुत ही सहज है। कोई भी आवे उनको यह समझाओ बाप हमको यह बादशाही देते हैं। तो बादशाही लेनी चाहिए ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हमारी हीरों से मुट्ठी भरती है। बाकी और तो सभी विनाश हो जावेंगे। खाली हाथ जावेंगे। बाप समझाते रहते हैं। तुमने 63 जन्म पाप किये हैं। विकार में गये हो। मुख्य पाप है विकार का। दूसरा पाप है बाप और देवताओं को गाली देना। डिफेम/हेना। विकारी भी बने हैं तो गली भी दी है। बाप की कितनी ग्लानी की है। तो बाप बैठ बच्चों को बैठ समझाते हैं टाईम न गंवाना चाहिए। ऐसे नहीं बाबा हम याद नहीं कर सकते हैं। बोलो बाबा हम अपने को याद नहीं कर सकते हैं। अपने को भूल जाते हैं। देह-अभिमान में आना गोया अपने को भूलना। अपने को ही आत्मा याद नहीं कर सकते हो तो फिर बाप को कैसे याद करेंगे। बहुत बड़ी मंजिल है। सहज भी बहुत है। बाकी हां माया आपोजीशन करती है। गीता आद पढ़ते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। भारत की है ही मुख्य गीता। हरेक धर्म का अपना

एक शास्त्र है। जो धर्म स्थापन करने वाले हैं उनको गुरु भी नहीं कह सकते। यह भी बड़ी भूल है। सद्गुरु तो एक ही है। बाकी गुरु कहलाने वाले तो ढेर हैं। कोई ने बाढ़े का काम सिखलाया, ईजीनियरी का काम सिखलाया तो वह भी गुरु हो गया। हरेक सिखलाने वाला गुरु होता है। सद्गुरु तो एक ही है। अभी तुमको सद्गुरु मिला है। वह सच सत्य बाप भी है तो सत टीचर भी है। इसलिए बच्चों को जास्ती गफ्लत नहीं करनी चाहिए। यहां से अच्छी रीत रिफ्रेश होकर जाते हैं फिर घर में जाने से ही यहां का सभी भूल जाते हैं। गर्भ-जेल में भी बहुत सजा मिलती है। वहां तो गर्भ महल होता है। विकर्म कोई होता ही नहीं जो सजा खानी पड़े। यहां तुम बच्चे समझते होहम बाप से सम्मुख पढ़ रहे हैं। बाहर अपने घर में तो ऐसे नहीं कहेंगे। वहां समझेंगे भाई पढ़ाते हैं। यहां तो डायरेक्ट बाप के पास आते हो। बाकी बच्चों को अच्छी रीत समझाते हैं। बाप की और बच्चों की समझानीमें वजन हो जाता है। बाप बैठ बच्चों को सावधान करते हैं। बच्चे बच्चे कह समझाते हैं। तुम शिवालय और वेश्यालय को समझाते हो। बेहद की बात है। यहशिवालय वेश्यालय क्लीयर कर दिखाओ तो मनुष्य को कुछ लज्जा आवे। वह तुम ऐसे ही हंसी कुडी में समझाते हो। हंस2 कर समझाओ तो अच्छी रीत समझे। रहम करो अपन पर। क्या इस वेश्यालय में ही रहना है। बाबाको ख्यालात तो चलती है कैसे2 समझावे। ~~बड़~~ बड़ी बन्दर बुधि हैं। समझते ही नहीं। कितनी तुम मेहनत करते हो फिर भी जैसे डब्बे में ठिकरी। हां2 करते जाते हैं। बहुत अच्छा है, यह गांव में समझाना चाहिए। खुद नहीं समझते। शाहुकार पैसे वाले लोग तो समझेंगे ही नहीं। बिल्कुल ध्यान ही नहीं देंगे। वह पिछाड़ी में आवेंगे। फिर तो टु लेट हो जावेंगे। न उनका धन काम में आवेगा न योग में ही रह सकेंगे। बाकी हां जो सुनेंगे सो प्रजा बनेंगे। गरीब बहुत ऊंच पद पा सकते हैं। तुम कन्याओं पास क्या है। कन्या को गरीब कहा जाता है। क्योंकि बाप का वरसा तो बच्चे को मिलता है। बाकी कन्या दान दिया जाता है। दान देते हैं तब, जब कि वेश्यालय में जाती है। शिवालय में जाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कहेंगे वेश्यालय में जाओ तो पैसे देंगे ~~नहीं~~। शिवालय ~~में~~ में जाते हो तो एक पाई भी नहीं देंगे। मनोवृति देखो कैसी है बन्दरों को। तुम कोई से भी डरो मत। खुली रीति समझानी चाहिए। फूल होना चाहिए। तुम तो बिल्कुल सच्च कहते हो। यह है संगम युग। उस तरफ है भुगड़े मुठ। उस तरफ है हीरों की मुठ। अभी तुम बन्दर से बदल मंदिर लायक बनते हो। पुरुषार्थ कर हीरे जैसा जन्म लेना चाहिए ना। शिकल बहादुर शेरनी मिशल होनीचाहिए। कोई2 की शिकल जैसे रिढ बकरी मिशल है। थोड़ा ही आवाज से डर जावेंगे। तो बाबा सभी को खबरदार करते हैं। कन्याओं को तो फंसना नहीं चाहिए। और हो बन्धन में फंसेंगे तो फिर विकार के लिए दन्ड खावेंगे। ज्ञान अच्छी रीत धारण करेंगे तो तो विश्व की महारानी बनेंगी। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व की बादशाही देने आया हूं। परन्तु कोई तो पत्थर बुधि समझते ही नहीं। नसीब में नहीहैं। बाप है ही गरीब निवाज। गरीब हैं कन्याएं। मां-बाप शादी नहीं करा सकते हैं तो दे देते हैं। तो उन्हों को नशा चढ़ना चाहिए हम अच्छी रीत पढ़कर पद तो पावें। अच्छे स्टुडन्ट जो होते हैं वह पढ़ाई पर ध्यान देते हैं, हम पास विथ आनर हो जावेंगे। उनको ही फिर स्कालरशिप मिलती है। जितनापुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। वह भी 21 जन्म लिये। अल्प काल की बात नहीं। यहां है अल्प काल का सुख। आज कुछ मर्तबा मिला, कल मौत आ गया। खलास। तमोप्रधान दुनिया है ना। दिन-प्रति-दिन आयु कम होती जाती है। यहां एवरेज आयु 35 वर्ष। वहां तो है। 25-150 वर्ष। योगी और भोगी में फर्क है ना। मनुष्य तो बिल्कुल पत्थर बुधि हैं। तो बाप कहते हैं गरीबों पर जास्ती ध्यान दो। शाहुकार मुश्किल उठते होंगे। सिर्फ कहते हैं बहुत अच्छा है। यह संस्था बहुत अच्छी है। बहुतों का कल्याण करेंगे। अपना कुछ भी कल्याण नहीं करते। बहुत अच्छा, कहा, बस बाहर गये, खलास। माथाडन्डा उठाये ~~बैठते~~ बैठी है। हवास ही गुम कर देती हैं। एक ही थप्पड़ लगाने से अक्ल चट करदेती है। बाप समझाते हैंभारत का हाल देखो क्या हो गया है। बच्चों ने ड्रामा को अच्छी रीत समझा है। देखो यहडाक्टर(खेमचन्द)

है आंखों को आपरेशन करने जाते है। साथ में ज्ञान का तीसरा नेत्र भी देते हैं। बाप भी खुश होते हैं बहतों का कल्याण करते हैं। हीरों-जवाहरों से अच्छी रीत मुठ भरनी है। अभी तुम यहां के हो नहीं। हम रावण राज्य में है नहीं। अभी हम जा रहे हैं। टांग इस तरफ, मुंह उस तरफ है। बच्चों को जब भी समय मिलता है तो विचार सागर मंथन करना चाहिए। कैसे कैसी2 युक्ति बतावें। क्या बात है जो इतना माथा मारते हुये भी समझते नहीं हैं। बहुत पत्थर बुधि हैं। भगवान के सिवाय कब कोई सुधार न सके। बाप को ही आना पड़ता है ऐसे पत्थर बुधियों को पारस बुधि बनाने। कृष्ण कब आयेगा कैसे आयेगा यह भी किसको पता नहीं। वह तो 40 हजार वर्ष कह देते। इतनी पुरानी बात किसको याद भी नहीं आ सकत। तुम सुनाते हो नई बात। तो यह मेहनत करने भगवान को आना पड़ता है। आकर बन्दरों को मंदिर लायक बनाते हैं। तो पूरा पुरुषार्थ करो। इसमें गफलत करेंगे तो वहां पहुंच न सकेंगे। बाप जानते हैं कौन अच्छी सर्विस करते हैं। कुमारियों की पढ़ाई में बुधि अच्छी होती है। आजकल तो नौकरी में भी लग जाते हैं। अभी यहां क्या मिलता है। भुगड़े मुठ मिलती है और क्या। यहां विश्व की बादशाही। वजन करो ना। अभी है संगम। पुरानी दुनिया खलास होनी है तो हीरों से मुठ भरनी चाहिए। या भुगड़ों से। हीरे मुठ का पूरा जानते नहीं हैं। भुगड़े मुठ पर ही राज़ी हो जाते हैं। समझाना चाहिए हम ईश्वरीय सर्विस करते हैं। मनुष्य को देवता, शिवालय का मालिक बनाते हैं। वास्तव में कन्याओं को थोड़ी नौकरी कर मां-बाप वा भाईयों आद की पालन करनी है। सास, ससुर भी बहू की कमाई नहीं खाते। ला नहीं। परन्तु आजकल तो भूख हो गई है। बच्चियां भी कमा कर सारे घर को खिलाती है। इतने दुःखी है जो अपने को छू भी नहीं सकते हैं। अभी तो तुम बच्चों को शेरनी बनना चाहिए। श्रीमत पर चलना चाहिए। विघ्न तो पड़ेंगे। अत्याचार होंगे। माताएं ही पुकारती हैं। कलश भी बाप माताओं को देते हैं। यह भी बाबा ने समझाया है। तुम कब फिमेल से मेल, कब मेल से फिमेल बनते हो। भल इस समय मेजोरिटी माताओं की है वहां तो कोई पुरुष भी बन जावेंगे ना। ऐसे नहीं फिमेल सदैव फिमेल ही बनती है। तो बाप कहते हैं खास कुमारियों को अपने पर रहम करना है। नहीं तो अपने ऊपर पहाड़ गिराते हैं। विकार में जाकर। बाप तो आकर निर्विकारी बनाते हैं। उस कालेज आद के भर्तवे को भी देखो। यह भर्तवा भी देखो। पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। माताओं कुमारियों को तो बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। बहुतों की सर्विस करनी है। मददगार बैठा है बाबा। कड़े3 म्युजियम खोलो। समय नज़दीक आता जाता है। किराया असद से डरने की बात नहीं। एक दिन आवेगा जो तुमको पांव पड़ हाथ जोड़कर ले जावेंगे यहहाल लो सर्विस के लिए। तुम भी फटसे कहेंगे अरे यह क्या शर्म नहीं आता। तुम कोसखाना बनाते रहते हो। कन्यायें जब ऐसी बैठ समझावें तब ही हृदय विदीर्ण होंगे। बाकी मकान आद खरीद थोड़ी करनी है। बच्चों के वैसे काम में लानी चाहिए। ऐसे ही थोड़ी छोड़ देना है। भलदो तीन हजार किराया लेवे। बड़ा म्युजियम खोलो। यह ईश्वरीय कालेज है। जिसमें कैरेक्टर्स सुधरते हैं। मुख्य है विकार का कैरेक्टर्स और विकारी मनुष्यों को यह कैरेक्टर्स अच्छा लगता है। दुनिया बहुत ही खराब है। 8-10-8 12 वर्ष की बच्चियां समझती हैं छोटे बच्चों साथ विकार करना खेल है। बाप बच्चियों साथ खेल करते। बात मत पूछो। साधु संत आद सभी फंसे हुये हैं। है ही विकारी दुनिया। गुरु-गुसाई भी गन्द करते हैं। पतित बन पड़ते हैं। बाप समझाते हैं अभी चर्ये-खर्ये भक्ति पूरी हुई। डाके उतरते2 नीचे गिर पड़े हो। रावण एकदम लात मार देता है। वह है लतसंग। मनुष्य गुसे में होते हैं लात मारते हैं। रावण ने भी लात मार सीढ़ी से ही उतार दिया है। यह है बेहद की बात। बाप कहते हैं इसमें गफलत मत करो। झुटका मत खाओ। स्टुडन्ट कब झुटका थोड़ी खाते हैं। कब उबासी नहीं देते। न पढ़ने वाले पिछाड़ी में उबासी देते रहेंगे। झुटके खाते रहेंगे। बाबा समझ जाते हैं यह क्या पद पावेंगे। स्वर्ग में जावेंगे, नाम होगा। बाकी पद में तो रात-दिन का फर्क है ना। बाबा खास कुमारियों के लिए समझाते हैं। बोलो हम अपना जीवन हीरे जैसा बनाने यह रूहानी सेवा करते हैं। तुम चाहते भी हो श्रेष्ठाचारी बनें। तो तो पवित्र ही श्रेष्ठाचारी बनेंगे। अपवित्र बनेंगे नहीं। कन्याओं का भी कालेज हो जिसमें भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बने। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।